॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

# श्रीनृसिंहाष्टकं स्तोत्रम्

प्रणेता

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

**श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज**

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

# श्रीनृसिंहाष्टकं स्तोत्रम्


प्रणेता:--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

**श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य**

**श्री ''श्रीजी'' महाराज**



प्रकाशक--

**विद्वत्परिषद्**

**अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ**

सलेमाबाद, पुष्करक्षेत्र, किशनगढ जि. अजमेर ( राज० )

वि. सं. २०७३ निम्बार्काब्द ५०११

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

# समर्पणम्

**श्रीनृसिंहपदाम्भोजे समर्प्यते सभक्तिकम्।**
**त्वदीयकृपया स्तोत्रं जातं जीवनसम्प्रदम्॥**

श्रीनृसिंहचरणाब्जभक्तिकामः-
**श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः**

शुभमिति - वैशाख शुक्ल १४
शुक्रवार, वि. सं. २०१३
श्रीनृसिंहजयन्तीमहोत्सव
दिनांक - २०/५/२०१६

# भगवान् नृसिंह के अवतार का निहितार्थ

सर्वतन्त्र, सर्वशक्तिमान् सर्वेश्वर इस जगत् का निर्माण करते हैं तथा समय-समय पर स्वेच्छा से नाना स्वरूप ग्रहण करके अवतरित होते हैं। श्रुति में कहा गया है कि ''तत्सृष्ट्वा तदेवानुप्राविशत्'' वह परमेश्वर इस सृष्टि का सर्जन करके इसी में प्रविष्ट होगया। इस प्रवेश प्रक्रिया की इयत्ता नहीं है अपितु निःसीमता भी है। श्रुति कहती है-''अत्यतिष्ठत् दशाङ्गुलम्'' अर्थात् परमेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र विश्वमय भी है तथा विश्वातीत भी है। सर्वेश्वर सर्वव्यापक तत्त्व है। अज्ञानीजन इसे नहीं समझते हैं, कुछ समझते हैं तो पूरी तरह से दृढ विश्वास नहीं करते। परमात्मा जगदीश्वर है क्योंकि जगत् व्याप्य है ईश्वर व्यापक है। सृष्टि के प्रारम्भ काल से ही दानव लोग तपस्या के बल पर अपने को जगदीश्वर मानने लगे तथा आश्रितों से भी यही अपेक्षा करते रहे कि वे भी उसे जगदीश्वर मानें अर्थात् अल्पशक्ति को सर्वशक्ति, अल्पज्ञ को सर्वज्ञ, अव्यापक को व्यापक माने। जो स्वयं ही सर्जन में अन्य के अधीन है वह अपने को स्रष्टा मनवाना चाहता था। इसी प्रकार का दानव जाति का हिरण्यकशिपु था। उसने ब्रह्मा की आराधना करके मृत्यु के भय से मुक्ति चाही। मृत्यु का भय जीव को सदा ही रहता है दानव इसी बात को समझ नहीं पाया कि जगदीश्वर को ही मृत्यु का भय नहीं है उससे तो मृत्यु भी भयभीत होती है-''भीषास्मात् मृत्युर्बिभेति'' हिरण्यकशिपु ने जितने कारण मृत्यु के सम्भावित थे उसकी बुद्धि के अनुसार उन सब से न मरने का वरदान मांग लिया।

भागवत में कहा है--

**भूतेभ्यस्त्वद्विसृष्टेभ्यो मृत्युर्माभून्मम प्रभो।** भाग.७/३/३५
**नान्तर्बहिर्दिवा नक्तमन्यस्मादपि चायुधैः।**
**न भूमौ नाम्बरे मृत्युर्न नरैर्न मृगैरपि।।** भाग. ७/३/३६

वरदान प्राप्त करके वह अपने को जगदीश्वर मानने लगा। अपने पुत्र प्रह्लाद और समस्त दानवों से भी उसे यही अपेक्षा रही। किन्तु प्रह्लाद परम भागवत था। वह शील सम्पन्न सत्यनिष्ठ, जितेन्द्रिय तथा समस्त भूतों को आत्मवत् प्रियसुहृत् मानता था। उसकी सर्वव्यापक भगवान् वासुदेव में नैसर्गिक प्रीति थी। वह जीवन का सार विष्णु भक्ति को ही समझता था। उसका कथन है-

**श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।**
**अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।**

प्रह्लाद ने दानवों को उपदेश दिया कि द्विज होना, देव होना ऋषि होना या असुर होना, बहुज्ञ होना ये सभी मुकुन्द की प्रीति के कारण नहीं है। दान, तप, यज्ञ, शौच, व्रत आदि से भी मुकुन्द का अनुग्रह प्राप्त नहीं होता है केवल अमला भक्ति से ही हरि प्रसन्न होते हैं और सब विडम्बना है इसलिए हरि में भक्ति करो--

**''ततो हरौ भगवति भक्तिं कुरुत दानवाः।''**

प्रह्लाद के उपदेश से दानवों में कुछ हरिभक्त होने लगे। इससे हिरण्यकशिपु ने नाना यातनाओं से अपने पुत्र का वध करना चाहा। हिरण्यकशिपु ने अपने पुत्र से कहा कि तुम मन्दभाग्य हो जो मुझ से अन्य को जगदीश्वर मान रहे हो। यदि वह तुम्हारा वासुदेव सर्वत्र विद्यमान है तो वह इस खम्भे में क्यों नहीं दीख रहा-

**''क्वासौ यदि स सर्वत्र कस्मात् स्तम्भे न दृश्यते।''**

तुम जिसकी शरण चाह रहे हो वह आज तुम्हें बचाए''

ऐसा कहकर उस महासुर ने महाभागवत प्रह्लाद का शिर उसके शरीर से खड्ग द्वारा अलग करना चाहा किन्तु सर्वव्यापक, भक्तवत्सल भगवान् वासुदेव श्रीकृष्णचन्द्र नृसिंह रूप में प्रकट होगए। भगवान् नृसिंह अपने भक्त प्रह्लाद के इस वचन को कि वासुदेव सर्वव्यापक है वह कण-कण में स्थित है-सत्य करने के लिए अवतरित हुए। प्रह्लाद यह मानते ही नहीं थे अपितु उनका दृढ विश्वास था कि भगवान् समस्त भूतों में निवास करता है। भगवान् का रूप हम लोगों की कल्पना के अनुसार ही नहीं है अपितु वह अपनी इच्छा से अद्भुत रूप भी ग्रहण कर लेता है जैसे नृसिंह रूप। इन सब सिद्धान्तों को प्रमाणित करने के लिए ही भगवान् का नृसिंह रूप में अवतार हुआ। भागवत में कहा है--

**सत्यं विधातुं निजभृत्यभाषितं व्याप्तिं च भूतेष्वखिलेषु चात्मनः।**
**अदृश्यतात्यद्भुतरूपमुद्वहन् स्तम्भे सभायां न मृगं न मानुषम्।।**

भगवान् के इस अवतार का प्रथम निहितार्थ है कि वह सर्वव्यापक तत्त्व है। समस्त चराचर जगत् उसमें समाया हुआ है संसार में कोई भी स्थान ऐसा नहीं है कि परमात्मा विद्यमान न हो-ईशवास्य उपनिषद् में कहा है--

**''ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चिज्जगत्यां जगत्''**

इसीलिए परमात्मा खम्भे से प्रकट हो गया।

वेद में जिज्ञासा रूप में कहा है कि इस जगत् का आवरण कौन है, यह जगत् सृष्टि से पहले कहाँ? किसकी शरण में था-

**''किमावरीवः कुह कस्य शर्मन्''**

अवतार का द्वितीय निहितार्थ यह है कि परमात्मा सृष्टि निर्माण में स्वतन्त्र है, उसे किसी अन्य सामग्री की आवश्यकता नहीं है वह कारण परतन्त्र नहीं है। उसका स्वरूप अचिन्त्य है इसीलिए उसने अपनी इच्छा से नृसिंह रूप धारण किया। वह ब्रह्मा की सृष्टि के अधीन नहीं है ब्रह्मा के निर्माण में तो आज तक नृसिंह रूप नहीं बन पाया अपितु ब्रह्मा स्वयं ही परमात्मा के अधीन है। हिरण्यकशिपु ने ब्रह्मा के बनाए हुए भूतों से न मरने का वरदान पाया था।

अवतार का तृतीय निहितार्थ यह है कि भगवान् अपने शरणागतों की रक्षा करते हैं वे परम कारुणिक हैं। प्रह्लाद ने शरणागति को स्वीकार किया था उसका दृढ विश्वास था कि परमात्मा मेरी रक्षा करेंगे। भगवान् नृसिंह की स्तुति में आचार्य आनन्दवर्धन ने विविध व्यङ्ग्यार्थों से भरा हुआ एक श्लोक कहा है--

**स्वेच्छाकेसरिणः स्वच्छस्वच्छायायासितेन्दवः।**
**त्रायन्तां वो मधुरिपोः प्रपन्नार्तिच्छिदो नखाः।।**

अपनी इच्छा से न कि परतन्त्रता के कारण केसरी (सिंह) का रूप धारण करने वाले मधुरिपु भगवान् विष्णु के नाखून आप लोगों की रक्षा करें। नृसिंह रूपधारी विष्णु के ये नख अपनी स्वच्छ कान्ति से चन्द्रमा को भी खिन्न करने वाले हैं क्योंकि चन्द्रमा (द्वितीया के चन्द्रमा की आकृति नख के समान होती है) एक है ये बीस (चारों पैरों के) हैं। चन्द्रमा में केवल सफेदी हैं इनमें

लालिमा भी है। चन्द्रमा केवल सुखी प्राणियों को आह्लादित करता हैं ये नख तो शरणागत की पीड़ा का भी हरण करते हैं। ब्रह्मा की सृष्टि के जितने भी उपाय हैं वे केवल कदाचित् शारीरिक कष्ट को दूर कर सकते हैं किन्तु भगवान् ही शरणागतों के समस्त दुःखों की निवृति करके परम आनन्द प्रदान करते हैं।

जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' महाराज की काव्य वाणी न कभी विश्राम लेती है न पुरातन पड़ती है। नित्यनवीन भावों को लेकर भगवान् के विविध रूपों के स्तवन में वह निरत रहती है। श्री ''श्रीजी'' महाराज का यह सिद्धान्त है कि श्रीकृष्णचन्द्र भगवान् सर्वेश्वर की ही ये सब भगवद् विभूतियाँ हैं। भगवान् नृसिंह की यह 'स्तुति' भक्त प्रह्लाद के समान हमारे चित्त में भगवान् की दृढि भक्ति प्रदान करे। श्री ''श्रीजी'' महाराज की समर्थ वाणी हमारे चित्त को पवित्र करके अमला भक्ति का विकास करे।

श्री 'श्रीजी' महाराज का सेवक–
निम्बार्कभूषण **डॉ. दूलीचन्द शर्मा** साहित्याचार्य
मुरलीपुरा (जोबनेर) वास्तव्य
प्राचार्य–श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
अ. भा. श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)
जि. अजमेर ( राजस्थान)

# भक्तहितार्थ ही भगवान् का अवतार हुआ

जब-जब भारतवर्ष की पवित्र धरा पर आसुरी शक्तियों का प्राबल्य होता है तब श्रीसर्वेश्वर कृष्ण ही अपने रूपों में नृसिंह-वराह-वामन, राम-कृष्ण रूप में इस भूतल पर अवतार धारण करते हैं।

जब हिरण्यकश्यपु के उपद्रव से देवादि सभी त्रस्त थे, तब ऐसी असह्य अवस्था में भगवान् ने नृसिंह रूप से प्रकट होकर अपने शरणापन्न प्रिय भक्त पर अद्भुत रूप धारण करके उसकी सर्वतोभावेन रक्षा की।

भक्तप्रवर श्रीप्रह्लाद भगवान् श्रीनृसिंह के समीप पहुँच कर निवेदन किया प्रभो! मैं तो अज्ञानी असहाय हूँ आपने मुझ पर जो असीम अनुकम्पा की है जिसका उदाहरण कहीं भी प्राप्त नहीं होता। करबद्ध मेरी प्रार्थना है कि मेरे इस अज्ञ पिता जो आसुरीवृत्ति का प्रयोग किया उसके हेतु मैं क्षमा चाहता हूँ।

भगवान् श्रीनृसिंह ने कहा प्रह्लाद! तेरे इस पिता का स्वतः कल्याण होगया है। उसके द्वारा तेरे पर जो नानाविध रूप से दारुण अत्याचार हुआ है उसके लिए मुझे अतिशीघ्र तेरी रक्षार्थ अवतार लेना था किन्तु मैंने विलम्ब किया है उसके लिए मैं क्षमा प्रार्थी हूँ।

**क्वेदं वपुः क्व च वयः सुकुमारमेतत्**
**क्वेता प्रमत्तकृतदारुणयातनास्ते।**
**नालोकितं विषममेतदभूतपूर्वं**
**क्षन्तव्यमङ्ग यदि मे समये विलम्बः।।**

अर्थात् कहाँ यह अल्पायु कैसा यह कोमल शरीर और उस प्रमत्त दुर्दान्त दुष्ट के द्वारा दारुण यातना, ऐसा यह अभूतपूर्व असहनीय दृश्य पहले कभी नहीं देखा, प्रह्लाद! मेरे आने में जो विलम्ब हुआ हैं उसके लिए मैं स्वयं क्षमा याचना करता हूँ।

वस्तुतः देवर्षिप्रवर श्रीनारदजी द्वारा माता कयाधु को उपदेश दिया जिसका प्रभाव भक्तशिरोमणि प्रह्लाद पर हुआ। जब इनके शिक्षा गुरु ने हरिण्यकश्यपु के कहने पर उसे कैसी पढाई हुई, इस जिज्ञासा के कथन पर श्रीप्रह्लादजी ने कहा--

**श्रवणं कीर्तनं विष्णोः स्मरणं पादसेवनम्।**
**अर्चनं वन्दनं दास्यं सख्यमात्मनिवेदनम्।।**

इस नवधा भक्ति को श्रवण कर उत्तेजित होकर हिरण्यकश्यपु ने कहा क्या? यही पढाई हुई है, तब तेरा भगवान् कहाँ है, श्रीप्रह्लादजी ने कहा वे प्रभु तो सर्वत्र है, सर्वव्यापक है, क्या? इस खम्बे में भी है, उसने कहा जी हाँ इसमें भी है, तत्काल उस असुर ने खम्बे को लक्ष्य करके गदा का प्रहार किया, उसी क्षण भगवान् श्रीनृसिंह प्रकट होकर उस दैत्य का संहार किया, अतः श्रीप्रभु की निश्चल भक्ति का ही यह विलक्षण प्रभाव है।

आज श्रीनृसिंह जयन्ती को श्रीप्रभु की प्रेरणा से ही यह लघु कलेवर रूप पुस्तक के रूप में प्रस्तुत है।

**--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य**

शुभ मिति-वैशाख शुक्ल १४ शुक्रवार
वि. सं. २०७३ दिनांक २०/५/२०१६

# श्रीनृसिंहाष्टकं स्तोत्रम्

( १ )

**मनसा नृसिंहं वन्दे सर्वदेवनमसकृतम्।**
**प्रह्लादकष्टहर्तारमद्भुतरूपकं हरिम्।।**

समस्त देवों के द्वारा अभिनमन करने वाले भक्तप्रवर प्रह्ललाद के जितने भी संकट है उनका निवारण करने वाले ऐसे अद्भुत स्वरूप को धारण किये हुए स्वयं श्रीहरि जो नृसिंह के रूप में प्रकट हुए उनकी अन्तःकरण से वन्दना करते हैं ।।१।।

( २ )

**श्रीमद्भागवते यस्य चरितं चारुवर्णितम्।**
**ईदशं नृसिंहं नौमि केशेन्द्रवन्दितं हृदा।।**

श्रीमद्भागवत में जिनका सुन्दर चरित वर्णन किया गया है। ऐसे ब्रह्मा-शंकर-इन्द्र आदि के द्वारा अपने हृदय से जिनकी वन्दना की जाती है। ऐसे भगवान् नृसिंह को प्रणाम करते हैं।।२।।

( ३ )

**श्रीनृसिंहपदाब्जेषु नमस्करोति हार्दिकम् ।**
**प्रह्लादः शिरसा वाचा श्रद्धया मनसा धिया।।**

श्रद्धा वाणी और मन तथा उत्तम मति से और शिर से

प्रह्लाद स्वयं अपने अन्तर्मानस से भगवान् श्रीनृसिंह के चरण कमलों में अपने हृदय से अभिनमन करते हैं ।।३।।

( ४ )

**नमन्ति दूरतो देवाः श्रीनृसिंहपदाम्बुजे।**
**दृष्ट्वा विचित्ररूपपञ्च पलायन्ति भयाकुलाः।।**

उस पावन अवसर पर समस्त देवता भगवान् नृसिंह के चरणारविन्दों में दूर से ही प्रणाम करते हैं नृसिंह भगवान् के इस अद्भुत स्वरूप का अवलोकन कर भयभीत होकर भाग रहे हैं।।४।।

( ५ )

**ऋषयोमुनयः श्रेष्ठाः प्रणमन्ति हृदा गिरा।**
**नृसिंहचरणाब्जेषु पावनेषु पुनः पुनः।।**

परमश्रेष्ठ परम उत्तम ऋषि–मुनिजन नृसिंह भगवान् के चरण कमलों में जो अत्यन्त पवित्र है। बार–बार अपने हृदय और वाणी के द्वारा प्रणाम करते हैं।।५।।

( ६ )

**नृसिंहं सततं नौमि मुनीन्द्रादि-प्रसेवितम्।**
**महाद्भुतस्वरूपञ्च पीतजटाभिः शोभितम्।।**

मुनीन्द्रादिकों के द्वारा परिसेवित पीत जटा से सुशोभित ऐसे अद्भुत स्वरूप श्रीनृसिंह भगवान् को अनवरत अभिनमन

करते हैं।।६।।

( ७ )

**अनन्तरूपिणं वन्दे भक्तार्थं धृतरूपकम्।**
**भगवन्तश्च गोविन्दं श्रद्धया सादरं हरिम्।।**

अनन्तानन्तरूप को धारण करने वाले और वह भी भक्तजनों के निमित्त स्वरूप को धारण किये हुए गोविन्द स्वरूप भगवान् नृसिंह की सादर वन्दना करते हैं।।७।।

( ८ )

**प्रेमाभक्तिप्रदाने च तत्परं नृसिंहं भजे।**
**परात्परतरं ब्रह्म साधुवृन्दैः समर्चितम्।।**

उत्तम सन्तजनों के द्वारा जिनकी अर्चना की जाती है। ऐसे ही परात्पर परब्रह्म भगवान् नृसिंह जो अपनी प्रेमाभक्ति को प्रदान करने में तत्पर उनका भजन करते हैं।।८।।

( ९ )

**श्रीनृसिंहाष्टकं स्तोत्रमुत्तमा-भक्तिसम्प्रदम्।**
**राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम्।।**

उत्तम भक्ति को प्रदान करने वाला यह नृसिंहाष्टक स्तोत्र जिसकी रचना उन श्रीप्रभु के ही युगलचरणारविन्दों में समर्पित है।।९।।

*

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

## श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

## श्री "श्रीजी" महाराज

द्वारा विरचित-

# ✻ ग्रन्थमाला ✻

| क्र. सं. | | प्रकाशित | श्लोक सं. |
|---|---|---|---|
| १. | श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातःस्तवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या | ,, | |
| २. | श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) | ,, | ११८ |
| ३. | उपदेश - दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक) | ,, | |
| ४. | श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२) | ,, | |
| ५. | श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक) | ,, | ३६५ |
| ६. | श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) | ,, | १०५ |
| ७. | श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक) | ,, | ५८ |
| ८. | हिन्दु-संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक) | ,, | |
| ९. | भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक) | ,, | १३७ |
| १०. | श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक) | ,, | १८६ |
| ११. | श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक) | ,, | ४० |
| १२. | श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) | ,, | २२ |
| १३. | श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक) | ,, | १५ |
| १४. | भारत कल्पतरु (पद सं० ६६, दोहा सं० १६०) | ,, | |

---

कुल हिन्दी पद सं० २७८२ कुल श्लोक सं० २२४४

श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्र-चूडामणि, सर्वतन्त्र - स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

## श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य
## श्री "श्रीजी" महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ -सलेमाबाद